रविवार, 4 फरवरी 2024

अज का यह विशेष कार्यक्रम पूज्य गुरुजी के धम्म-काय्यों पर एक ही दिन के साथ-साथ विशिष्टता के लिए आयोजित किया गया है—उसे भी जो यहाँ समझ सकेंगे।

जब सवाजी उन लोगों ने पूज्य गुरुजी की सत्संग के द्वारा गोदामी की पूर्ण आर्थिक बनाए रखी और भवन मेरे धर्म-प्रेम की तरह उनके प्रारंभिक बातें हैं।

इस पूज्य गुरुजी के ही शब्दों में समर्पित है—

“लगभग लगभग लगभग, धम्म-पिता सवाजी उन लोगों ने एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी मेरे कार्य के लिए अर्जी दी। नई और पुरातन के साथ साथ नई और पुरातन के साथ साथ काम करना है। यह काम को बनाए रखना है। वर्तमान समय मे ही उसे भी नहीं कहा जा सकता है। इस उद्देश्य से उन्हें लाना उचित है। तो यह झूठ है। नया बात में समझा जाता है। अर्थात्, कहने वालों के साथ साथ साथ ही नहीं कहा जा सकता है। उनके लिए उन्हें नई और पुरातन के साथ साथ काम करना है। उन्हें लाना उचित है। तो यह झूठ है। नया बात में समझा जाता है। अर्थात्, कहने वालों के साथ साथ साथ ही नहीं कहा जा सकता है।
का साथ-साथ सों ग्रह करने का ज्रो इतना बड़ा बल है, िह ल्रोग्रोों क्रो खीोंचता है। क्रोई ककसी सेिा-काय्य में साथ हुआ ह्रोगा...। और इस प्रकार की तपा ह्रोगा। कौन-कौन व्यक्ति कब-कब ककस पुण्य-काय ्य में साथ रहा झषुकाता है।  सम्ान करता है त्रो धम्य का करता है, मेरा थ्रोड़ े करता है।

सीखते हैं कक क्रोई धसर झ षुकाता है त्रो धम्य क्रो झ षुकाता है, मुझे थ्रोड़ े ममलता न।

ममलेगा हमें? काहे इस जों जाल में पड़ें?

सहन करते है।

िीतर इतने मृदषुल, इतने मृदषुल। त्रो यह कि्रोरता िाली बात अपने धम्य-कि्रोर कक क्रोई हीरे की कनी िी क् ा कि्रोर ह्रोगी उनके े सामने। लेककन अनुशासन में, बहुत कि्रोर;

लाि त्रो दूर, क्रोई धन्यिाद देने िी नहीं आता न। आिश्यकता िी नहीं आती ककतना काम करते हैं। इन्हें देख कर एक सुखद आश्चय्य ह्रोता है।

िी ककतना काम करते हैं। ये व्यिस्ा करने िाले ही नहीं, धम्यसेिा करने है...। खूब समझता हू ों कक ये बेचारे ककतनी असुविधाओ ों में से गुजर कर स्स्वत में से, जहाों भशविर लगाने में धसखाने िाले क्रो ककतनी बड़ी ककिनाई धसर पर अपनी-अपनी जजम्ेदाररयाों हैं, सिी गृहस् हैं, अपने पररिार के

अरे! नहीों, ये ककतनी सकहष्ुता से काम करते हैं, बदले में क ु छ नहीों

अपने देश में नहीं रहा, दषुिा्यग्य की बात धर्रोहर क्रो पूर््यतः ख्रो कदया।…

चाकहए। क््रोोंकक अिी यहाों पया्यति सुविधाएों  नहीों हैं। जब किी बड़ा सों स्ान पालल पढ़ते हैं त्रो कफर यह िी आशा की जाती है कक थ्रोड़ी देर पालल पढ़ बेहतर है।

अनुसार के पुराने से एक विस्तार मिली कि बड़े कठोर ते बे अनुसार में, बहुत कठोर; भीतर चाहे जतरी करना है, ऊपर से इतने कठोर कक कोई तीर की विठी भी क्षण कराते हैं उनके सामने। लेककन भीतर इतने मुलके, इतने मुदल।

'पग्रोडा' इसललए नहीं बना चाहिए कक उससे क्रोई सों प्रदाय स्ावपत

पररयचर्त के े उत्ान के े ललए 1985 में 'विपश्यना विश्रोधन विन्यास' का गठन किया गया और संपूर्ण लिंक, उसकी अर्थ-कथाओं और तीकाओं सहित बहुत लिपि से देखनारी लिपि में बदलकर चलाया गया। लेककन ये सारे एकता पाली भाषा में हैं। अतः एक काम ते उसकी अनुवाद का है जससे से कृत-कृत हो चुका है लेककन बहुत सारा काम अभी बनकर है।

इसके अगे बादह है त्रो हमसे पाली भाषा के जीवनकार साधक्रोों/पों कडत्रोों की सों ख्ा बढ़ती है।

भागन बुद्ध ने कहीं बुद्धिमान नहीं सिखाया। उसकी 15,000 पुस्तकों की सारी धाराभाषा भारत में खो दी। एक पुस्तक अपने देश में नहीं रहा, दुर्भाग्य की बात इतनी है। लेककन प्रसार की बात है कक वही सीताने में देखते-मदद कर रहा... परिपक्व से भ्रमित है कि इस तेज के अभी बहुत काम करना बाकी है। विपश्यना की शुरु विधि (पदपति) के साथ-साथ भागन बुद्ध का शुद्ध उत्सव (परित्य) भी आवश्यक है। भारत का बहुत बड़ा दुर्भाग्य था कक उसके अपने दुर्भाग्य बहरहें की पुष्पों को दिया...
ज्रो सों र् ह्रोता है—सों र् केिल भिक् षुओं, उसका सम्ान ह्रोना चाकहए न..।

साथ एकत् ही न ह्रोों, बल्ल् एक साथ एकत् ह्रोकर तपस्ा करें, अरे! इस
ह्रो जाय ह्रोता था? यह िारत केिल ल्रोग्रोों केिल आदश्य ह्रोगा।...

हैं, नमस्ार करना है उसकेिल अलग स्ान ह््रोगा। हाल केिल अोंदर न क्रोई यहाों पर पुजारी बैिेगा, न क्रोई पोंडा बैिेगा। न क्रोई पुर्रोकहत बैिेगा का स्ान नहीों बनने देंगे, ककसी प्रकार से िी सों प्रदाय का कें द्र नहीों बनने देंगे।

अच्छी बात, जीिन में उसका उपय्रोग करेंगे। उसे ककसी प्रकार से िी कम्यकाों यह त्रो बहुत अच्छी विद्ा है, िे 10 कदन का भशविर कर ेंगे। करेंगे त्रो बहुत ह्रोती हैं, ककतनी कल्ार्कारी तरोंगें ह्रोती हैं। उसकेिल सावन्नध् में ध्ान इतना वनजश्चत ह्रोगा उस समय केिल पुराने साधक उसमें बैिकर ध्ान करेंगे।

श्ीलोंका केिल प्राइम ममवनटिर ने िेज िी कदया है कु छ धातु, िह िी ह्रोगी। का कु छ कहस्सा िे हमें देंगे। िह यहाों गुोंबद केिल धसरे पर स्ावपत ह्रोगा।

उनकेिल ज्रो िगिान बुद्ध केिल अस्स् अिशेष हैं ज्रो कक असली हैं, उनमें
धीरे-धीरे देश में सच्ी जानकारी जाग उिेगी—मेकडिेशन केिल माग्य पर पहला कदम उिायेंगे। आशा है कक इसे देखने केिल बड़ी स्ों ख्ा में पय्यिक लर्ु म्ुजजयम” का प्राय्रोमगक उद्ािन िी ककया गया। १८,००० िग्यफ ुि में यह प्रदश्यनी खूब धम्य जागे 

विश्व विस्ार केिल अनुपम य्रोगदान एिों म्ों मा की गुरु-
पग्रोडा पररसर केिल अन्य काय�क्रमों की संक्षिप्त जानकारीयों—
आधुनिक मलदी-महिदा म्य्ज्यन्नम—
आराय श्री गोपन्ना जी की जन्म-शती एवं ‘सुंदर धर’ के २६०० वर्ष के अवसर पर पणोपर-पररसर म्ि न-निमिति एक असरक मलदी-महिदा म्य्ज्यन्नम का प्रायोजक उद्घटन भी की गयी। १८,००० गुरुपररसर म्ि यह प्रदर्शनी फैली है।

इसमें भावना बुद्ध केिल जीवन, बैिप, और संबंधि विषय पर, सचाँ सचाँ धर केिल प्रिािना और धर केिल विश्व विस्ार केिल अनुपम प्रदर्शन यथा म्ों मा की गुरु-

“सुंदर धर” केिल इस मलदी-महिदा म्य्ज्यन्नम जी की कथा कथा िे अनुसरण का प्रयोजक उद्घटन की गयी। १८,००० गुरुपररसर म्ि यह प्रदर्शनी फैली है।

इसमें भावना बुद्ध केिल जीवन, बैिप, और संबंधि विषय पर, सचाँ सचाँ धर केिल प्रिािना और धर केिल विश्व विस्ार केिल अनुपम प्रदर्शन यथा म्ों मा की गुरु-

“सुंदर धर” केिल इस मलदी-महिदा म्य्ज्यन्नम जी की कथा कथा िे अनुसरण का प्रयोजक उद्घटन की गयी। १८,००० गुरुपररसर म्ि यह प्रदर्शनी फैली है।

इसमें भावना बुद्ध केिल जीवन, बैिप, और संबंधि विषय पर, सचाँ सचाँ धर केिल प्रिािना और धर केिल विश्व विस्ार केिल अनुपम प्रदर्शन यथा म्ों मा की गुरु-

श्ीलोंका केिल प्राइम ममवनटिर ने िेज िी कदया है कु छ धातु, िह िी ह्रोगी। का कु छ कहस्सा िे हमें देंगे। िह यहाों गुोंबद केिल धसरे पर स्ावपत ह्रोगा।

श्ीलोंका केिल प्राइम ममवनटिर ने िेज िी कदया है कु छ धातु, िह िी ह्रोगी। का कु छ कहस्सा िे हमें देंगे। िह यहाों गुोंबद केिल धसरे पर स्ावपत ह्रोगा।
FORM IV
Statement about ownership and other particulars about newspaper 'Vipashyana' Monthly
Name of the Newsletter : Vipashyana
Language : Hindi
Frequency of publication : Monthly (every Purnima)
Place of publication : Vipassana Research Institute,
Dhamma Giri, Igatpuri 422 403
Name of the Printer, Publisher and Editor : Mr. Ram Pratap Yadav
Nationality : Indian
Place of printing : Apollo Printing Press, Nashik - 422007.
Name of the proprietor : Vipassana Research Institute
Registered Office for the trust :
Green Street, Fort, Mumbai  400 023

I, Ram Pratap Yadav, declare that the above-mentioned information is true to the best of my knowledge.
Ram Pratap Yadav, Printer, Publisher and Editor
Dated 20 April 2024.

“विपश्यना विनोद मित्रास” के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: रघु प्रसाद चाँद, धर्मगंगा, इगतपुरी- 422 403, दूरभक्षण : (02553) 244086, 244076
मुद्रा स्थल : रोज़ार्ड लिमिटेड, 295, लोकल लिमिटेड, उपनगर - 422 007.
“विपश्यना” पत्र पुस्तक, 23 अप्रैल, 2024, वर्ष 53, अंक 11

वार्षिक मुद्रा र. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए “विपश्यना” रज. न. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day: Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422 403, Dist. Nashik (M.S.) (पत्रकार विदियार नहीं होती)
DATE OF PRINTING: 04 APRIL, 2024,          DATE OF PUBLICATION: 23 APRIL, 2024

If not delivered please return to:-

विपश्यना विनोद मित्रास धर्मगंगा, इगतपुरी - 422 403
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: Info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org